

भारत सरकार  
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय  
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 307

22 जुलाई, 2025 को उत्तरार्थ

**विषय: मृदा स्वास्थ्य और कृषि उत्पादकता**

307. श्री श्रीभरत मतुकुमिल्ली:

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने आंध्र प्रदेश में कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों के लिए विशिष्ट आकलन सहित हाल ही में देश में मृदा स्वास्थ्य की स्थिति पर कोई अध्ययन किया है;

(ख) यदि हाँ, तो मृदा उर्वरता प्रवृत्तियों, कार्बनिक कार्बन हास, सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के संबंध में प्रमुख निष्कर्षों का ब्यौरा क्या है और इनका प्रमुख फसलों में कृषि उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़ा है;

(ग) क्या मृदा स्वास्थ्य में गिरावट ने आदान दक्षता, दीर्घकालिक उपज संधारणीयता, या जलवायु परिवर्तनशीलता अनुकूलन को प्रभावित किया है; और

(घ) मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना की प्रभावशीलता बढ़ाने, क्षेत्र-विशिष्ट मृदा स्वास्थ्य सुधार पद्धतियों को बढ़ावा देने, और पीएम-किसान, प्राकृतिक खेती, और कृषि-विस्तार रूपरेखा के भीतर मृदा स्वास्थ्य लक्ष्यों को एकीकृत करने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

**उत्तर**

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क) से (ग): सरकार ने आंध्र प्रदेश के कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों सहित देश में मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता योजना की स्थिति पर दो अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

- राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद (एनपीसी), नई दिल्ली ने 2017 में 19 राज्यों के 76 जिलों में 170 मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं और 1700 किसानों को शामिल करते हुए 'भारत में मृदा स्वास्थ्य कार्ड के शीघ्र वितरण हेतु मृदा परीक्षण अवसंरचना' पर एक अध्ययन किया। मृदा

स्वास्थ्य कार्ड (एसएचसी) की सिफारिशों के अनुसार उर्वरक और सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रयोग के परिणामस्वरूप, यह बताया गया कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में 8-10% की कमी आई है। एसएचसी की सिफारिशों के अनुसार उर्वरक और सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रयोग के कारण फसलों की उपज में कुल मिलाकर 5-6% की वृद्धि दर्ज की गई।

- राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), हैदराबाद द्वारा मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता योजना (नवंबर 2017) के प्रभाव का अध्ययन किया गया था। रिपोर्ट के अनुसार एसएचसी की सिफारिशों के अनुरूप लगभग 62.8% किसान (199 गांवों के 3184 किसानों में से) उर्वरकों का उपयोग करते हैं। कम उर्वरक उपयोग के कारण प्रति एकड़ लागत में 4 से 10% की कमी आई। अधिकांश फसलों की पैदावार में यद्यपि कुछ वृद्धि हुई। अध्ययन में शामिल दो-तिहाई किसानों ने उल्लेख किया कि एसएचसी फायदेमंद है जो एक उत्साहवर्धक तथ्य है। कुल मिलाकर, धान के किसानों ने यूरिया के उपयोग में 9%, डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी)/सिंगल सुपर फॉस्फेट में 7% की कमी की, लेकिन पोटेशियम के उपयोग में 20% की बढ़ोतरी की। धान और कपास की खेती में विशेष रूप से यूरिया और डीएपी सहित उर्वरक के उपयोग में उल्लेखनीय गिरावट आई है जिससे प्रति इकाई क्षेत्र में खेती की लागत में कमी आई।

(घ): राज्य किसानों को मिट्टी की पोषक स्थिति के आधारभूत आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए, मृदा स्वास्थ्य कार्ड (एसएचसी) को लाभार्थियों से जुड़ी योजनाओं, जैसे राष्ट्रीय खाद्य तेल तिलहन मिशन और राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन, से भी जोड़ रहे हैं। क्षेत्र-विशिष्ट मृदा पोषक तत्व पुनर्स्थापन को बढ़ावा देने के लिए, एसएचसी के अंतर्गत फसल-वार उर्वरक का प्रयोग करने के सुझाव दिए जाते हैं। कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए), कृषि विज्ञान केंद्र जैसे कृषि-विस्तार कार्यकर्ता भी किसानों को एसएचसी द्वारा की गई सिफारिशों के बारे में जानकारी प्रदान करने के कार्य से जुड़े हैं।

\*\*\*\*\*